आपदा प्रबन्धन एवं जेण्डर आधारित मुददे्

उत्तराखण्ड प्रशासन अकादमी, नैनीताल

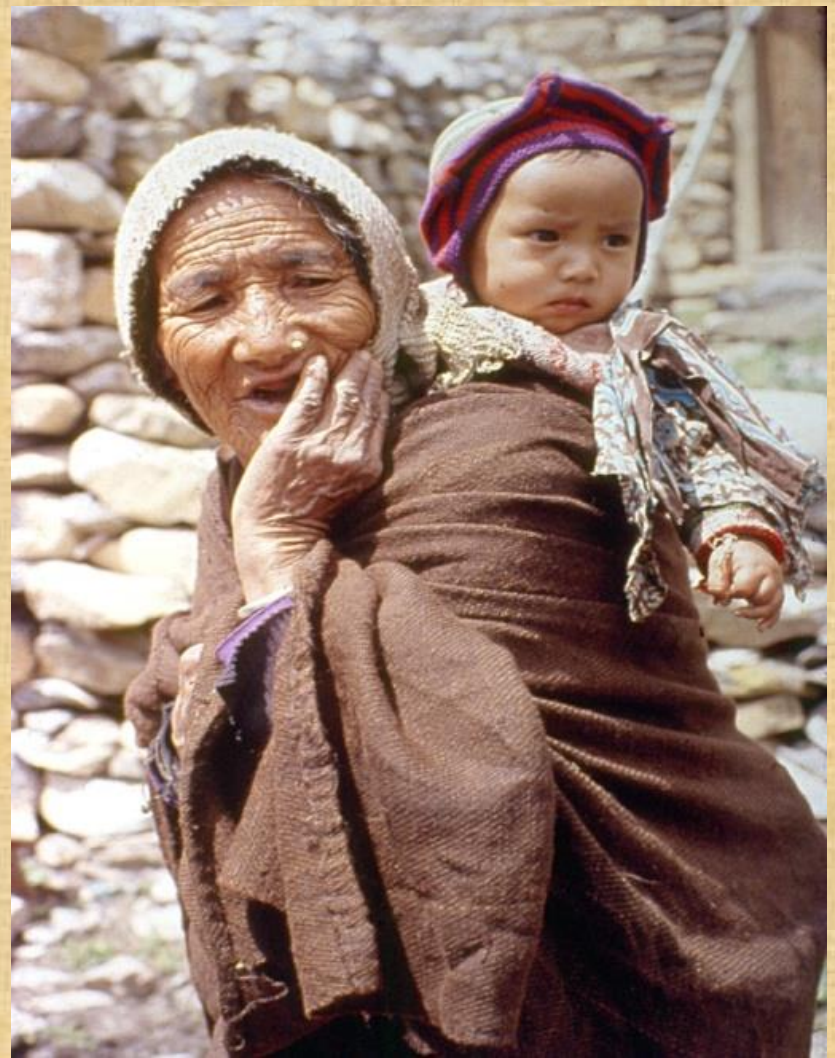

जेण्डर ???

जेण्डर

- स्त्री एवं पुरूषों के सामाजिक संरचना द्वारा निर्धारित भूमिकाऐं एवं दायित्व जिनसे एक विशेष सांस्कृतिक एवं स्थान पर उनकी सोच, कार्य एवं अनुभव निर्धारित होते है।

- जेण्डर का अर्थ महिला नहीं है किंतु समाज में महिलाओं की दोयम स्थिति को देखते हुए जेण्डर समानता के लिए महिला सशक्तीकरण पर बल दिया जाता है।

कुछ सामान्य जेण्डर आधारित रूढ़िवादी सोच

▪ महिला	पुरूष
▪ निर्भरता	स्वतंत्र
▪ गृहिणी	जीविकोपार्जन
▪ कमजोर	शक्तिशाली
▪ भावुक	तर्किक
▪ डरपोक	बहादुर
▪ देख–भाल करने वाले	प्राप्तकर्त्ता
▪ उदासीन	फुर्तीला

आपदा एवं जेण्डर

- महिला एंव पुरूष दोनों ही प्रभावित होते है।
- महिलाऐं पुरूषों से अधिक असुरक्षित हैं।

??

प्राकृतिक आपदाओं के दौरान पुरूषों के मुकाबले महिलाओं को ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

2007 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स और एसेक्स यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं द्वारा 141 देशों में किए एक अध्ययन के अनुसार, 1989 से 2002 तक हुई आपदाओं में मरने वाली महिलाओं की संख्या पुरूषों से काफी अधिक थी।

अध्ययन में यह तथ्य भी सामने आया कि जैसे–जैसे प्राकृतिक आपदा की विभीषिका बढ़ती गई, वैसे–वैसे पुरूष व महिला मृत्य–दर के बीच का फासला भी बढ़ता गया।

नेपाल में आये भूकंप के बाद से जो आंकडे मिले है, उनके मुताबिक इस भीषण भूकंप से प्रभावित होने वाले 13 लाख लोगों में से लगभग 53 प्रतिशत महिलांए है।

ऐक्शन एड द्वारा तैयार विमेन रेजिलएन्स इंडेक्स, यानी प्राकृतिक आपदा के दौरान अपने–अपने देश की महिलाओं की सुरक्षा व बचाव को लेकर किए गए उपायों के मापदंड के अनुसार नेपाल को 100 में से 45.2 प्रतिशत अंक मिले है। जापान का यह आंकडा 80.6 फीसदी है। पाकिस्तान को तो 100 में से सिर्फ 27.8 अंक मिले है। जबकि भारत को लगभग नेपाल के बराबर रखा गया है।

यदि कोई प्राकृतिक आपदा आती है, तो जापान के मुकाबले भारत, नेपाल व पाकिस्तान में औरतों के उससे प्रभावित होने की आशंका कही ज्यादा है।

वर्ष 1993 में महाराष्ट्र और वर्ष 2001 में गुजरात में भूकपों के दौरान क्रमश 10,000 व 20,000 लोग काल का ग्रास बने थे। जिनमें महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत काफी अधिक थी।

असहायता के लिए उत्तरदायी कारण

- शारीरिक एवं जैविक
- शैक्षिक
- आर्थिक
- सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक
- मनोवैज्ञानिक

जैविक एवं शारीरिक

- कम शारीरिक शक्ति
- तीव्र गति से दौड़ने मे अक्षम
- वेशभूषा द्वारा असुविधा (पहनावा)
- तैराकी न आना
- प्रजनन स्वास्थ्य समस्याऐं

शैक्षिक

- अशिक्षा, कम शिक्षा।
- जागरूकता का अभाव।
- मीडिया एवं सूचनातंत्र तक कम पहुँच।

आर्थिक

- निम्न आय स्तर
- स्थायी जॉब का अभाव
- पुरूषों पर निर्भरता
- संसाधन तक सीमित पहुँच
- उत्पादक से अधिक उपभोक्ता

सामाजिक एवं सांस्कृतिक

- विश्वास एवं रीति रिवाज
- भू स्वामित्व
- यातायात सुविधाओं तक कम पहुँच
- बच्चों, बुजुर्गों की देखभाल एवं घरेलू कार्य
- ऋण सुविधाओं का अल्प ज्ञान
- ऋण सुविधाओं का अभाव

मनोवैज्ञानिक

- अधिक संवेदनशीलता
- अधिक भावुकता
- अधिक तनावग्रस्त
- निम्न सामाजिक स्तर
- सामान्य अवस्था में आने में विलम्ब

बचाव कार्य जेण्डर

- महिलाओं एवं बच्चों को बचाव एंव दूसरे स्थान पर निष्क्रमण में कठिनाई
- व्यक्तिगत असुविधा
- शारीरिक एवं मानसिक शोषण
- मनोवैज्ञानिक स्थिति

महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता की कमी

राहत शिविर में समस्याऐं

- सफाई का अभाव
- निजता का अभाव, महिलाओं के लिए अलग आवास
- स्वच्छता का अभाव– गर्भवती एवं मासिक धर्म वाली महिलाओं हेतु
- बच्चों एवं नवजात के देख–रेख की सुविधाओं का अभाव
- स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव
- शिविरों में पुरूष प्रधानता
- शौचालय एवं व्यक्तिगत शौचालयों का अभाव

आपदा के पश्चात

- संपत्ति की हानि
- परिवार जनों की हानि
- वैधव्य
- अनाथ
- विकलांगता
- घरों का टूटना
- भूख एवं प्यास
- बीमारियॉ

महिलाओं को प्रधानता क्यों?

आपदा के बाद विपरीत प्रजनन परिणाम दिखाई पड़ते हैं। जैसे–

गर्भ हानि, समय पूर्व प्रसव, मृत प्रसव, प्रसव सम्बन्धी जटिलताऐं ।

भारत में 1984 के भोपाल गैस काण्ड में 24 प्रतिशत गर्भवती महिलाऐं लगातार गर्भपात का शिकार हुई है।

बांग्लादेश में 1988 की बाढ़ के दौरान किशोर बालिकाओं को **UTI** एवं **Perineal Rashes** बहुत मामले आये क्योंकि उनके पास अलग शौचालय तथा कपड़े धोने, सुखाने की सुविधाओं का अभाव था।

आपदा के पश्चात् राहत कार्य में समस्याऐं

- सांस्कृतिक मूल्य– महिलाओं को राहत शिविरों में जाने से रोकते हैं, बच्चों की देखभाल के उत्तरदायित्व के कारण घरों से दूर शिविर तक नहीं पहुँच पाती।
- महिलाओं का अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरूषों से बोलने में संकोच जिस कारण पुरूष राहत कर्मियों से बात नहीं करतीं।
- राहत सामग्री परिवार के मुखिया को बॉटी जाती है अतः महिलाऐं छूट जाती हैं।

आपदा के दौरान हिंसा की घटनाओं में वृद्धि

- बाल अपराध एवं शोषण लैंगिग शोषण, बलपूर्वक विवाह
- बंधुआ मजदूरी
- बाल विवाह
- लैंगिक शोषण एवं अवैध व्यापार के रूप में बढ़ती जेण्डर हिंसा
- **Transgendered** भी असहाय हो जाते हैं।
- वे न तो पुरूष राहत शिविर में जा पाते हैं न महिला राहत शिविरों में।

समाधान

- आपदा प्रबन्धन में महिंलाओं का प्रशिक्षण
- महिला चिकित्सक एवं नर्सो की राहत शिविरों में सेवाऐं
- महिला के प्रति संवेदनशीता
- महिला शिविरों में सुरक्षा के बन्दोबस्त
- राहत शिविरों में सुविधाओं में वृद्धि
- महिलाओं को सूचना तंत्र से जोड़ना

राहत शिविर में सुविधाऐं

- अच्छी चिकित्सा सुविधा
- मनोवैज्ञानिक परामर्श एवं काउन्सिलिंग
- परिवार एवं रिश्तेदारों से मिलना
- राहत सामग्री– नवजातों के लिए दूध, गर्भवती एवं प्रसव हेतु आवश्यक किट सेनिटरी नैपकिन्स का वितरण।

जेण्डर संवेदनशील आपदा प्रबन्धन

- जेण्डर आधारित अलग–अलग ऑकड़े
- महिलाओं का प्रतिनिधित्व
- नीतिगत दखल
- व्यवहारिक एवं रणनीतिगत आवश्यकताऐं
- सशक्तीकरण अवधारणा
- घिसी–पिटी रूढ़ियों में बदलाव
- जेण्डर बजटिंग

धन्यवाद